International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue.4 Mar-Apr- 2022

समकालीन व्यंग्य का यथार्थ बोध : 'वह लडकी'

प्रा.डॉ.रमेश माणिकराव शिंदे
सहयोगी अध्यापक (हिंदी विभाग) यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई
Email: rameshmshinde@gmail.com

'कोई तलवार इतनी बेदर्दी से नहीं काटती, जितना कोई व्यंग्य वचन' उक्त कथन के अनुसार हिंदी साहित्य में व्यंग्य साहित्य अपने अलग मुकाम को हासिल करता दिखायी देता है। व्यंव्य साहित्य में मील के पत्थर माने जाने वाले हरिशंकर परसाई ने व्यंग को हास्य से अलग कर एक तीक्ष्ण हथियार के रुप में अख्तियार किया ।कथा और शिल्प का दृष्टि से हिंदी व्यंग को एक नयी और निश्चित दिशा देने का श्रेय परसाई जी को ही है। व्यंग को विधा के रुप से स्वीकृत करने में विद्वानों में कई मनमुटाव है। की विद्वान इसे विधा की श्रेणी में रखते है तो कई व्यंग को साहित्यीक विधा से परे मानते है। बहुचर्चित व्यंगकार के.पी. सक्सेना कहते है "विधा की जो परिभाषा सदियों से चली जा रही है, उसमें व्यंग नहीं बँधता। बँधना भी नहीं चाहिए। ..... व्यंग विधा नाहीं बल्कि अभिव्यक्ति का एक बेहद सशक्त माध्यम है।..... व्यंग को विधा की परिधि में बाँध देना उसे अपने हितों तक सीमित रखना है। ..... एक मीडियम है व्यंग और मीडियम कभी विधा नहीं होता। "1 निसंदेह ही वर्तमान, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा लोगो का असली आयिना दिखाने का काम व्यंग कृतियाँ करती है। स्वातंत्र्योत्तर युग के प्रमुख व्यंग्यकारो में बलवीर त्यागी का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने समाज में व्याप्त पाखंड, भ्रष्टाचार, राजनीतिक दावपेच, दोगलेपन पर तिलमिला देनेवाले कटू व्यंग्य किये है।

प्रस्तुत व्यंग्य संग्रह 'वह लडकी' में उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक विसंगतियों और विकृतियों को व्यंग्य का विषय बनाया है। इस व्यंग्य संग्रह में कुल 67 व्यंग्य कथाओं को संकलित किया गया है। बलवीर त्यागी हरिशंकर परसाई की परंपरा के वे व्यंग्यकार है जो लोकजीवन की सरल भाषा में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पल रहे ढोंग, ढकोसलों, आडम्बर, पाखण्ड, भ्रष्टाचार, अन्याय, घुसखोरी आदि पर तीक्ष्ण एंव धारदार व्यंग्य कसने डरते नहीं है। 'वह लडकी' संग्रह के संदर्भ में उनका स्वयं का कथन देखें- "वह लडकी कोई मनगढत कथा नहीं। नंगी आँखों का ऐसा सच है, जो मुझे अंदर तक कचोटता है। वह आज भी वही बुझा-सा चेहरा लिए प्रकट होती है और पहले दिन की

माह में आज भी उसकी उदासी देखकर झनझना उठता हूँ। ऐसा क्यों, नहीं जानता। जानता हूँ तो बस इतना कि वह मेरी संवेदना को आहत कर जाती है और उसके जाने के बाद भी देर तक सोचता रहता हूँ, कि भारतमाता की इस अनुकृति के लिए आजादी का क्या अर्थ है? और वे सैंकड़ों भूख से बिलबिलाते, दम तोड़ते चेहरे मेरी आंखों के सामने छटपटाने लगते हैं, जो छके पेटों की अय्याशियों को टुकुर टुकुर देखना ही आदमी की सम्पन्नता का पैमाना मानना अपनी नियती होना स्वीकार लेते हैं।"2

'बलवीर त्यागीजी'ने संग्रह का पहला व्यंग्य 'लंका दहन' शीर्षक से लिखा है, जिसमें समाज में स्थित लालची, लोगों पर व्यंग किया है। बेटे के ससुराल वालों से पैसे माँगना, बहू के मायके पर बात बात पर ताने मारना तथा शादी के बाद बहू के मायके से चीजों को माँगना जैसी हरकत करनेवालों पर यह व्यंग्य कि शान है। मिनाक्षी उर्फ मीनू को उसके ससुरालवालों द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। सास द्वारा बार-बार उसके मायके वालों को कंगाल कहा जाता है उसपर विद्रोह करती मीनाक्षी जब सास को अपने मायके से लायी चिजें दिखाने के लिए कहती है। तब इस बात से क्रोधित सास मिनाक्षी को जिंदा जलाती है। पर मीनाक्षी सास तथा नंदन को लिपट जाती है। वह अपने पति को भी नहीं बक्ष देती । आग में लेपेट पति से वह कहती है- "आप तो मेरी पत के रक्षी हैं न। यही कसम तो ली थी अग्नि को साक्षी मानकर। अब मेरी रक्षा करना उसी आग में जलकर।"3 यहाँ मीनाक्षी लाचार स्त्री नहीं है। पीड़ित करनेवाले व्यक्तियों को उसी प्रकार पीडित करना मीनाक्षी ने चाहा। 'कफन' नामक व्यंग्य रचना में 'बलवीर त्यागीजी' ने बेटी के बाप की मजबुरी दर्शायी है। दहेज प्रथा हमारे भारतीय समाज की अनेक घिनौनी कुप्रथाओं में से एक है। आज प्रायः सभी राज्यों में कम अधिक मात्रा में इस प्रथा का पालन किया जाता है। नकद रूपये, सोने के गहने, कार, स्कुटर, फ़ीज, बंगला आदि वस्तुओं की मांग साधारण-सी बात बन गई है। लडके का बाप बेटे को पढ़ाने तक का खर्च लड़की के मायके की ओर से माँगता है। 'कफन' व्यंग्य कथा में लड़के का पिता एक ओर तो हमारी कोई विशेष माँग नहीं है ये देहराता है तो वहीं दूसरी ओर लडके का अमेरिका से लौटकर आना तथा अनुसंधान संस्थान में डिप्टी डायरेक्टर होने की बात सामने रखते हुए स्टण्डर्ड मेनटेन के लिए लड़की को पिता को कार माँगता है, कार रखने के लिए कोठी की मांग भी करता है और आगे कहता कि कोठी तो तभी अच्छी लगेगी जब उसमें फर्नीचर हो, टी.वी. हो, फ्रिज हो, रूमकुलर हो। शादी समारोह में भी खाने की फरमाईश शुध्द घी की करता है। इन सभी बातों को सुनकर दुःखी हुए लडकी के पिता बोलते हैं- "सोच रहा था, यह सब तो मुझे देना ही है। भगवान न करे विवाह के बाद कफन की जरूरत पड़ गई तो वह भी मुझे ही देना होगा इसलिए दहेज के साथ कफन देने के लिए किस दुकान से खरीदा जाए।"4 देखिए

यह है बेटि के पिता की बेबसी। ऐसे घरों में भेजते हुए बेटी के पिता का कलेजा काँपता होगा, और यदी बेटि तो ब्याह कर नहीं भेजे, तो रिश्ता टूटने का धब्बा भी सहना होगा।

दहेज न पाने की झूझालट और क्रोध की अभिव्यक्ति ससुराल वालों द्वारा होती है। बहु के साथ अमानुष व्यवहार, घर का सारा काम करवाना, उसे भूखा रखना, मारपीट करना आदि कई घटनाएँ इक्कीसवीं सदी में भी देखी जाती है। इतना ही नहीं कभी-कभी तो बहु की हत्या की जाती है या उसे जीवित जला दिया जाता है या फिर लडकी खूद अत्याचारों से तंग आकर आत्महत्या कर लेती है। यदि ऐसी लालची लोगों के सामने बाप शादी में कफन देने की बात करता है तो पाठक मजबूर होता हुए कहता है कि, इसमें लडकी के बाप का गलत क्या है? आखिर कब तक एक बेटी का बाप सबकुछ चुपचाप सहता रहे । 'बलबीर त्यागीजी' की व्यंग्य रचनाएँ पाठक के मन में ऐसे कई प्रश्नों का निर्माण करते हैं। आधुनिक काल में शिक्षा के बढ़ते व्यापक तथा स्त्री समानता के नारों और कानुनों के बावजूद स्त्री का अनेक रूपों में शोषण किया जाता है।

समाज की दूसरी बड़ी समस्या है घुसखोरी की। यह समाज का ऐसा रोग है जो हर क्षेत्र में चोरी छिपे पाया जाता हैं चाहे वो पद प्राप्ती के लिए हो या नौकरी के लिए हो। कोई आदमी यह सोच ही नहीं सकता कि बिना सिफारिश, बिना रिश्वत दिये उसका काम हो सकता है। बलबीर त्यागी की 'सी.आर' व्यंग्य रचना नौकरी में भरती में होने वाले भ्रष्टाचार का

रायवक भांडाफोड करती है। हर साल पदोन्नती की चाह में साक्षात्कार देनेवाले एक युवक ही हर बार रिजेक्शन की जाती है। उससे कनिष्ठ और अकुशल लोग भी आगे चले जाने से वह आहत है। अपनी कमियों को जानने हेतु सलेक्शन बोर्ड के चेअरमन से अपने चयन न होने का कारण पूछता है तो युवक के भोलेपन पर दया दिखाते चेयरमन उसके सामने उस फाईल का कागज दिखाते हैं, जहाँ प्रतिभागियों की क्षमता का मूल्यांकन किया गया है। अपने नाम के आगे हर कॉलम में गुड और व्हेरी गुड का घोषित परिणाम देखने के बाद अंतिम प्रविष्टि में लिखा होता है- "कार्य करने की विलक्षण क्षमता, किंतु कराने में अक्षम। इसलिए पदोन्नती के लिए अभी उपयुक्त नहीं।"5 अर्थात जब तक वह युवक चेयरमन लोगों के हाथों में घुस नहीं थमाता तब तक उसका प्रमोशन नामुनकिन है। इसी विषय पर बलवीर त्यागी की अन्य व्यंग्य रचना 'फायदा अपना अपना', 'सदाव्रत' है। 'सदाव्रत' में भ्रष्टाचारी लोग गरिबों का पैसा हडपकर मंदिरों में दान कर अपने सदाचारी होने का नाटक रचाते हैं। सीधे शब्दों में कहा जाए तो काला पैसा सफेद करने का तंत्र कैसे प्रयोग किया जाता है इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत व्यंग्य में है।

'बलबीर त्यागीजी' के व्यंग्य रचनाओं में मार्क्सवाद विचारधारा का प्रभाव साफ तरह से दिखायी देता है। समाज में स्थित दो वर्ग की दूरियों को दर्शाती उनकी व्यंग्य रचना गरिबी की मौज है। कहानी का पात्र गोबर है जो गाँव में घटित घटनाओं से परेशान है। हर दिन डकैती की घटनाओं से लोग भयभीत है। गोबर के पिता 'हेरी' उसे समझाते हुए कहते है गरिबों के घर न कभी चोरी होगी न डाका। क्योंकि, दो वक्त के रोटी के लिए मोहताज लोगों के घर से चोरों को कुछ नहीं मिलता। उन्हीं के शब्दों में देखें – "फेर तू काये कू डर रया है। म्हारे पै क्या रखा है, खाणा खा होर चुप सो जा। डांका तो माया वालों के पड़े है। थाली कटोरी पर कौन डांके वाले आवैं है।"6 यहाँ त्यागी जी समाज की विषमता को रेखांकित करना चाहते हैं। एक वर्ग है जो ऐशो-आराम से जिंदगी जी रहा है, तो दूसरा वर्ग गरीबी, भूख की समस्या से हर दिन टकराता है।

वर्तमान में पारिवारिक मूल्यों में आया बदलाव 'बलबीर त्यागीजी' के लेखनी से छूटा नहीं है। 'मम्मी और माँ' व्यंग्य कथा में उन्होंने आधुनिक और पंरपरागत संस्कारों की तुलना की है। आज की मम्मी अपने 'सन' को आधुनिकता के नाम पर मानवीयता से दूर लेती जा रही है। मम्मी का सन राईम सुनाने को कहा जाए तो चोली के पीछे क्या है और तु चीज बडी है मस्त के गीत गाता है। इतना ही नहीं राष्ट्रपति का नाम पूछा जाए तो प्रतिउत्तर में यह क्या होता है? जैसे प्रश्न पूछता है। वहीं माँ का बेटा उपरि सभी सवालों के ठिक से जवाब दे देता है। 'बलबीर त्यागी' यहाँ कहना चाह रहे हैं कि, दृकश्राव्य माध्यमों की बढ़ती उपलब्धता के कारण बच्चों में अपनत्व, बंधुता की भावना कम होती जा रही है। बच्चों को अच्छे संस्कार देने की जिम्मेदारी माता-पिता की प्रमुख रूप में होती है। बाहर का माहौल चाहे कैसा भी क्यों न हो लेकिन घर का माहौल कैसा रखना है यह दाम्पत्यों का ही कर्तव्य है।

प्रस्तुत व्यंग्य संग्रह में सार्वजनिक सेवाओं का घटियापन कई व्यंग्य रचनाओं का विषय देखा जा सकता है। मूलतः सार्वजनिक सेवाओं का गठन ही जनता की सहायता एवं कल्याण हेतु किया जाता है। किन्तु विडम्बना यह है कि हर जगह अंधेरगर्दी, अराजकता फैली है। सेवा विभागों में काम करनेवाले कर्मचारियों की लापरवाही के कारण कई लोगों का अपनी जान देनी पड़ी। इन्हीं विकृतियों का व्यंग्यकारने अपना लक्ष बनाया है। 'वर्दी' नामक व्यंग्य रचना में फल बेचनेवाले से वर्दीवाला सेब, केले खरीदता है लेकिन वर्दी का रोब दिखाकर पैसे देने से इन्कार कर देता है, 'सुरक्षा' नामक व्यंग्य रचना में व्यंगकार त्यागी जी ने पोलिसोंद्वारा रात को चलनेवाले काले धंदे का पर्दापाश किया है। प्रस्तुत व्यंग्य में पोलिस एक प्रोफेसर को रात को बाहर घुमने से मना करते हैं अपनी बात का हवाला देते हुए कहते हैं-"ओफ्फो। प्रोफेसर साहब, इतना भी नहीं समझते। किसी भले आदमी को रात आठ बजे से सुबह छः बजे तक घर से

बाहर नहीं निकलना चाहिए। आपका अपहरण हो जाए, कोई गोली-चाकू की वारदात हो जाए तो पुलिस नाहक बदनाम होगी। जब आप जैसे पढ़े-लिखे लोग ही कानून भंग कर पुलिस के काम में बाधा पहुँचाएंगे तो आपकी सुरक्षा का दायित्व कैसे लिया जा सकता है।"7 यहाँ प्रस्तुत रचनामें रात के समय का खौफ दिखाकर लोगों को मन में डर पैदा करनेवाले पूलिसवालो का सच व्यंग्यकार ने बाहर निकला है।

जनता की रक्षा करना, उनको सहायता करना, उनमें सुरक्षा की भावना जागृत करना पुलिस का परम कर्तव्य हैं। किन्तु पुलिस ने रक्षक के बदले भक्षक का रूप धारण कर लिया है। पुलिस जनता के साथ दुराचार एवं अशिष्ट व्यवहार करती है। बलवीर त्यागी जी ने पुलिस विभाग पर तीखे व्यंग्य बाण छोड़े है। आज हम देखते हैं कि गरिब लोग और गरिब बनते जा रहे है और अमिर अत्याधिक अमिर। इसका मुख्य कारण है हर दिन बढती महँगाई । 'मंदा' व्यंग्य कथा में 'बलबीर त्यागीजी' ने गरिब घर की दशा को रेखांकित किया है। जहाँ अनाज के बढ़ते दामों के कारण परिवार के सदस्य राशन नहीं ले पाते। उन्हें भूखे पेट सोना पड़ता है। इसी व्यंग्य संग्रह में एक व्यंग्य कथा 'दूसरा हिंदूस्थान' नाम से है जिसमें एक ही देश के एक ही समय में दो हिंदुस्तान का चित्र लेखक ने दिखाया है। एक हिंदूस्तान अमिरों के बच्चों का है और दूसरा वह हिंदूस्तान जहाँ गरिबी के कारण बच्चों को शिक्षा से पालक वंचित रखने में मजबूर है। धनिया पात्र के माध्यम से इसी समस्या पर विचार व्यक्त करते हुए' बलबीर जी' लिखते हैं – "धनिया चुप रह गई। कैसे समझाए अपनी इस नादान वाचाल पोती को, कि वे हैं तो अपने देश के ही बच्चे, पर उस हिन्दुस्तान के नहीं, जिस हिन्दुस्तान की रूलिया और उसके टोले के बच्चे हैं।"8 अपनी सरकार की तरह इस व्यंग्य रचना का एक वाक्य यहाँ दृष्टव्य है जो राजनीतिक धुर्तता का दर्शाता है- " जनता की मांग पर हर माल के दाम घटा रहा हूं, अपनी सरकार की तरह।"9

शिक्षा के क्षेत्र में अमिरों तथा जमीनदारों को बोलबाला दर्शाती एक रचना 'प्रमाणपत्र' है। जिसमें कुशलता तथा लायक ठहरता गरिब का बच्चा उसी नौकरी के प्रमाणपत्र की राह देखता रहता है जिसे जमिनदार ने अपने अकुशल बेटे को नौकरी पर लगाकर हासिल कर लिया है। 'बलबीर त्यागी' के व्यंग्य का प्रमुख रोष वर्तमान राजनीति पर भी है। नेताओं का भाई भतीजावाद, अफरसशाही, दोगलापन, दलबदलू प्रवृत्ति आदि विषयों पर उन्होंने चुटकियाँ ली है। भारतीय राजनीति को भ्रष्ट, खोखली एवं कलुषित बनाने वाले कारणों में से एक है - नेताओं की व्यक्तित्वहीनता। नेताओं के निर्णयों से जनता का होता नुकसान, गरिबों के हाथ की कला का -हास आदि का

लेखाजोखा बलबीर त्यागी की व्यंग्य रचना में दिखायी देता है। आंतरराष्ट्रीय व्यापार की बातें करके स्वदेशी कलाकारों को सड़क पर लाने वाले नेताओं पर निशाना साधते हुए, उनकी धूर्तता उन्ही के मूंह से निकालते हुए बलबीरजी यहाँ दृष्टव्य है"बहनों को तो खासतौर से खुश होना चाहिए। जल्दी ही सरकार औरतों को रोस्ट करने वाले तंदूरों को बंद कर विदेशी ओवन मंगवाने वाली है। जिन पर बना खाना डिब्बा बंद होकर आपके घरों में सप्लाई किया जाएगा। इस प्रकार बहनों को तिहरा लाभ होगा। न जलाए जाने का डर, न परचूनिए की दुकान के चक्कर और न किचन् में माथापच्ची का झंझट। 10

'भगवान की दिल्ली यात्रा' यह व्यंग्य तो अधिक हास्यास्पद तथा सद्यस्थितियों की भिषणता दर्शाता है। पार्वती की जिद्द पर शिवजी उन्हें घुमाने दिल्ली ते जाते है। वहाँ पार्वती को आये अनुभव पाठक को हँसाते हैं और साथ ही वर्तमान सच्चाई को रू-ब-रू भी करते हैं। क्षीण होती मानवीय संवेदनाएँ, भ्रष्टाचार, लुट की प्रवृत्ति, छल कपट, दूसरे की दुःख में आनंद की अनुभूति लेते मनुष्य आदि अनुभवों को लेकर पार्वतीजी निश्चय करती है कि अब के बाद वे कभी शिवजी को घुमाने ले जाने की जिद्द नहीं करेंगी। बलवीर त्यागीजी आधुनिक हिंदी व्यंग्य के सही मायने में सशक्त हस्ताक्षर है। 'गोदान' के पात्रों के नामों की सहायता उन्होंने अपने कई व्यंग्य रचनाओं में लिए है जो पाठक को ओर अत्याधिक प्रभावित करते है। दरअसल यह 'त्यागीजी' की खासियत ही है। 'वह लडकी' व्यंग्य कथा संग्रहों में उन्होंने व्यंग्य को हास्य से अलग कर एक तीक्षा हथियार के रूप में आख्तियार किया है इसमें दोहराय नहीं। उनकी व्यंग्य भाषा के अपने तेवर है, अपनी भंगिमाएँ है जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विविध स्तरों में छिपी विसंगतियों और विद्रुपताओं की चीरफाड करने में सक्षम है।

संदर्भ सूचीः

1) डॉ.पटेल, भरत. व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई, कानपुर. चिन्तन प्रकाशन, 2007 पृ.25.

2) त्यागी, बलवीर. यह लडकी, दिल्ली. मनु प्रकाशन. 2003 (भूमिका से)

3) –वहीं – पृ.12

4) –वहीं – पृ.75

5) –वहीं – पृ.99

6) –वहीं – पृ.13

7) –वहीं – पृ.84

8) –वहीं – पृ.88

9) –वहीं – पृ.81

10) –वहीं – पृ.60